

PAPER-2, UNIT - I

Theories of Mountain Building of Kober

पर्वत निर्माण के संकल्प में विभिन्न विद्वानों ने अपने अलग-अलग सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। इन सिद्धांतों को दो वर्गों में रखा जाता है।

① प्रथम वर्ग के अंतर्गत इन सिद्धांतों को रखा जाता है, जिसके अनुसार भू-परत पर पर्वतों का निर्माण अशांत क्षैतिज संचलन के कारण भू-परत में विकृति एवं कल्पन होने से होता है।


② दूसरे वर्ग के अंतर्गत इन सिद्धांतों को सम्मिलित किया जाता है, जिसके अनुसार पर्वतों का निर्माण — लम्बक संचलन के कारण होता है।

को पुनः दो वर्गों में रखा जाता है। — प्रथम वर्ग के अंतर्गत इन सिद्धांतों को सम्मिलित किया जाता है। जिसमें क्षैतिज संचलन पृथ्वी में विकृति होने से उत्पन्न होता है। इसके अंतर्गत संकुचन सिद्धांत (Compression theory) का अद्ययन किया जाता है। इस वर्ग के अंतर्गत तथा जेफ्रीज का सिद्धांत महत्वपूर्ण है।

दूसरे वर्ग के अंतर्गत इन सिद्धांतों का अद्ययन किया जाता है, जिसमें क्षैतिज संचलन की उत्पत्ति महाद्वीपीय प्रवाह के कारण होती है। इसके

संतर्गत महाद्वीपीय प्रवाह के विद्यंत को सम्मिलित किया जाता है। यह का के संतर्गत केगनर, डोम, सोल्पी, तथा डेली के विद्यंत प्रमुख हैं।

कोबर का पर्वत निर्माणक शून्यनति सिद्धांत (Geosynclinal origin theory of Kober)

प्रसिद्ध जर्मन विद्वान कोबर ने पर्वत पर्वतों की उत्पत्ति की व्याख्या के लिए — 'शून्यनति सिद्धांत' का प्रतिपादन किया। वास्तव में उनका प्रमुख उद्देश्य प्राचीन दृढ़ श्रृंखलों तथा शून्यनति में संबंध स्थापित करना था। कोबर ने यह तथ्य अपने शून्यनति सिद्धांत के आधार पर पर्वत निर्माण की क्रिया को समझाने का प्रयास किया है। उनका सिद्धांत संकुचन शक्ति पर आधारित है। पृथ्वी में संकुचन होने से उत्पन्न बल से शक्ति उत्पन्न होती है। जिससे प्रेरित होकर सम्पीडनात्मक बल के कारण शून्यनति का मूलका पर्वत होकर पर्वत का रूप  धारण करता है। जहाँ पर आज पर्वत हैं, वहाँ पर पहले शून्यनतियाँ थी, जिन्हें कोबर ने पर्वत निर्माण बल बताया है। इन शून्यनतियों के चारों ओर प्राचीन दृढ़ श्रृंखलें थी, जिन्हें क्रेटाजेन बताया।

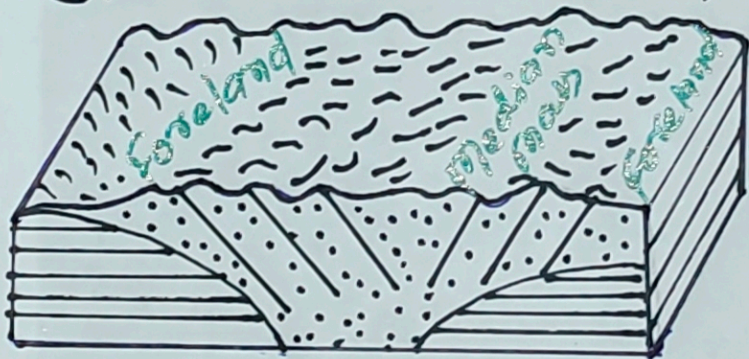
कोबर के अनुसार शून्यनतियाँ लम्बे तथा चौड़े क्षलप्रणाली थीं। पर्वत निर्माण की पहली अवस्था शून्यनति निर्माण की होती है। जिसके दौरान पृथ्वी में

संकुचन के कारण श्रृंखला का निर्माण होता है। इसे श्रृंखला कहते हैं। प्रत्येक श्रृंखला के किनारे पर दृढ़ श्रृंखला होते हैं, जिन्हें कोषट के आदेश (Foreland) बताया है।

इन दृढ़ श्रृंखला के अपरदन से प्राप्त मलका का नदियों द्वारा श्रृंखलाओं के चोटे-चोटे जमाक होता रहता है। यह क्रिया को अवसादीकरण कहते हैं। अपवाही जमाक के कारण भारत में वृद्धि होने से श्रृंखला की तली में निरंतर चोटा होता है। इसे अवतलन की क्रिया (subsidence) कहते हैं। इन दोनों क्रियाओं के लम्बे समय तक चलने के कारण श्रृंखला की गहरी मूल्यत आधिक हो जाती है तथा आधिक मात्रा में मलका का निक्षेप हो जाता है।

पश्चिम श्रेणियाँ

पश्चिम श्रेणियाँ



कोषट के पर्वत निर्माण के श्रृंखला दिशा।

जब श्रृंखला शर जाती है तो पृथ्वी के संकुचन से उत्पन्न क्षैतिज संकुचन के कारण श्रृंखला के दोनों आदेश एक दूसरे की ओर खिंचने लगते हैं। इसे पर्वत निर्माण की अवस्था कहते हैं। इस तरह श्रृंखला के दोनों पार्श्वों के लड़ाही के समान खिंचने के कारण श्रृंखला के तलछट पर जल पड़ता है,

अर्थात् आग्नेयों के पाठ बरकने से उत्पन्न
सम्पीडनात्मक बल के कारण अणुनन्ति के-
तलछट में विकृति तब मोड़ पड़ने लगता है
जिस कारण मलका कल्पित होकर पर्यन्त का रूप
स्वात्त कर लेता है। अणुनन्तियों के दोनों
खिन्तों पर दो पर्यन्त श्रेणियों का निर्माण होता
है, जिन्हे कोषर ने 'श्रेणिकेतेन' नाम दिया
है। अणुनन्ति के मलका का पूर्णतः या आंशिक
रूप में कल्पित होना सम्पीडन के बल पर
आव्यारित होता है।

—:0:—

